नारी संघर्ष की त्रासदीः 'छिन्नमस्ता'

रंजन.एम.परमार

पीएच.डी स्कोलर

वर्तमान समय़ में हिन्दी साहित्य़ में नारी विमर्श और दलित विमर्श को लेकर काफी ऊहापोह रहा है । सदिय़ो से हमारी पुरुष व्य़वस्था ने संस्कारो और आदर्शो के नाम पर स्त्री को विरासत में पराधीनता ही दी है । बचपन से ही लडकी के भीतर स्त्रीत्व का एसा बीज रोपा जाता है जो उसकी स्वतंत्रता में बाधक बन जाता है । मैथिलीशरण गुप्त की "अबला जीवन हाय़ तुम्हारी य़ही कहानी आँचल में है दूध और आँखो में पानी ।" पंक्तिय़ो को अपना नसीब मानकर स्त्री अपना जीवन बसर करती है । किन्तु आज की नारीवादी द्रष्टि स्त्री को स्त्री शक्ति का स्मरण दिलाकर पुरुष के उत्पीडनपूर्ण रवैय़ा के प्रति संघर्ष का मार्ग दिखाती हैं ।आधुनिक य़ुग में शिक्षा ने स्त्री को अपने अस्तित्व एवं पहचान के लिए जागृत किय़ा है । आज स्त्री सिर्फ बेटी, बहन, पत्नि, माँ बनकर रहेना नहीं चाहती बल्कि अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहती है । आज स्त्री त्य़ाग की मूर्ति बनना नहीं चाहती और ना ही सीता की तरह अग्निपरीक्षा देना चाहती है, आज स्त्री अपने अधिकार के लिए जागृत भी है और अपने साथ हुए अत्य़ाचार के खिलाफ लडना भी जानती है । सुभाष सेतिय़ा के शब्दो में,

" शिक्षा हमारे भौतिक और मानसिक उत्थान में भी सहाय़क होती है । महिलाओं के लिए शिक्षा का और भी अधिक महत्व हैं , क्य़ोंकि अशिक्षित रहने के कारण वे अपने प्रति होनेवाले भेदभाव का प्रतिरोध नहीं कर सकती । ".....(1)

नारी का संघर्ष पुरुषो के खिलाफ बिलकुल नही है बल्कि उस व्यवस्था के खिलाफ है उस परंपरागत रूढियों, परंपरा के खिलाफ है जिसने स्त्री के पैरों में संस्कार और आदर्शो की बेडीयाँ डाल दी है जिसने उसके पंख काट दिये है । आज स्त्री परंपराओं के जकडन से मुक्ति चाहती है, अपनी जमीन खुद तलाशती है । हिन्दी के अंतिम दो-तीन दशको के महिला साहित्यकारों नें अपने लेखन और विषय को परंपरागत मानसिकता और रूढियों से मुक्त होकर कथा साहित्य को नइ जमीन और सोच प्रदान की हैं । इन्होनें एसा साहित्य रचा जो नारी को अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाना सीखाता है ।

नारी विमर्श को अपने साहित्य का केन्द्र बनाकर लिखनेवाले महिला साहित्यकारो में प्रभा खेतान एक पहेचान बनकर आती हैं । उनके उपन्यास उनकी आत्मकथा का ही अंश हैं जो स्त्री जीवन की त्रासदी को ही प्रस्तुत करते है । 1993 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित यह उपन्यास स्त्री के उत्पीडन एवं सामर्थ्य, संघर्ष की त्रासदी हैं । छिन्नमस्ता' की नायिका प्रिया के विवाह पूर्व की कहानी प्रभा खेतान के जीवन की कहानी हैं । परंपरागत संस्कारों एवं आधुनिकता के बीच अपनी अस्मिता को तलाशती मारवाडी स्त्री की त्रासदी हैं ।

सदियों से पुरुष प्रधान समाज ने स्त्री को घर की चार दीवारों के भीतर चूले चौके तक ही सीमित रखा ईतना ही नहीं संस्कार और मर्यादा की आड़ में सदैव उसे बंधन में रखा लेकिन जब प्रिया इन मर्यादाओं की बाड़ को तोडकर बाहर नीकलती हैं । और सफलता प्राप्त करती हैं तब नरेन्द्र यह सहन नहीं कर पाता और प्रिया को गुस्से से कहता हैं -

" यह मत भूलो प्रिया कि मैं पुरुष हूं इस घर का कर्ता । यहां मेरी मर्जी चलेगीः हां सिर्फ मेरी ।".....(2)

यही होता आया है सदियों से स्त्रीयो के साथ स्त्री जब भी अपनी अलग पहेचान बनाने घर से बाहर नीकलती वही पुरुष के अहम को ठेस पहुँचाता है । जब प्रिया अपने अस्तित्व के

प्रति जागृत होकर जब खुद की पहचान बनाना चाहती हैं तब पति नरेन्द्र का अहम बोल उठता हैं,-

“ दरअसल तुम्हें इतनी खुली छूट देने की गलती मेरी ही थी । मुझे पहले ही चिडिया के पंख काट डालने चाहिए थे । ” .....(3)

बचपन से ही प्रिया घर में उपेक्षित एवं माँ के प्यार से वंचित रही । बेटी होना उसमें भी काली होना उसके लिए जैसे अपराध बन जाता है । बचपन में अपने ही भाई द्वारा बलत्कृत होने पर भी दाई माँ ने बलात्कार के खिलाफ आवाज उठाने से मना किया, किसीसे कहना नहीं, ‘इदन्नम ’ में मन्दा को भी यही सीखाया जाता हैं । सदियो से ही बलात्कार जैसे जघन्य अपराध के सामने स्त्री को चुप रहेना ही सीखाया जाता है ।

पति के धनाढ्य परिवार में पति के नाम से जाना जाना प्रिया को स्वीकार्य नहीं है । बचपन व किशोरावस्था में माता-पिता के परिवार का उसके प्रति उपेक्षित व्यवहार और रवैया भी इसके लिए जवाबदार हैं । जब प्रिया को पति के व्यवसाय में डमी पार्टनर (स्लीपिंग पार्टनर) बनने का अवसर मीलता है तो वह महेनत से अपना व्यवसाय फैलाने में सफलता प्राप्त करती हैं और राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजी जाती हैं । नरेन्द्र प्रिया को एक साधारण परंपरागत स्त्री के रुप में ही देखना चाहता हैं । प्रिया जब परंपरागत स्त्री के इस साँचे को तोडती हैं तो उसके सामने परिवार और व्यवसाय दोनों में से किसी एक को चुनने का विकल्प दिया जाता है । नरेन्द्र कहेता है,

“ मैं सीरियस हूं । फिर कहता हूं, यदि आज तुम लन्दन गई तो मेरे घर में तुम्हारी जगह नहीं । यह भी साली कोई जिंदगी है, जब देखो तब बिजनेस । फिर सुन लो, यहां मत आना, आओगी तो मैं धक्के देकर बाहर निकलवा दूंगा ।”.....(4)

एक तरफ हम स्त्री सशक्तिकरण की बाते करते है स्त्री पुरुष समान होने का दावा करते है वहाँ शनि शिंगणापुर की घटना (30 नवम्बर, 2015 दिव्य भास्कर), महेसाना के सूरज गाँव की घटना (19 फरवरी, 2015 गुजरात समाचार) हमें ये सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम शिक्षित हैं? जिस स्त्री की कोख से पुरुष जन्म लेता है वही जन्म देनेवाली स्त्री अपवित्र हो सकती है लेकिन जन्म लेनेवाला पुरुष नहीं । आज भी लडकीयों को कइ पाबंधियो का सामना करना पडता है सूरज गाँव में लडकियों को मोबाइल देने पर रोक लगा दी, क्यो कि वह लडकी है, क्यों लडको पर एसी रोक नहीं ? आज परंपरा का यह बीज हमें स्त्री होने का अहेसास दिलाता है । त्याग, समर्पण, संस्कार, मर्यादाएँ यह शब्द क्यों एक स्त्री के लिए ही निर्मित किए जाते है? त्याग और मर्यादाओं की नींव पर ही क्यों स्त्री के अस्तित्व को खडा कर दिया जाता है ? व्यवस्था को बरकरार रखने के लिए क्यों स्त्री को ही आहूत किया जाता है ? यही भाव प्रिया के इन शब्दों द्वारा व्यक्त होता है,

"सच कहूं नरेन्द्र, ये शब्द भ्रम है । औरत को यह सब इसलिए सिखाया जाता हैं कि वह इन शब्दों के चक्रव्यूह से कभी बाहर नहीं निकल पाएँ ताकि युगों से चली आती आहुति की परंपरा को कायम रखे ।".....(5)

समाज की स्वीकृति पाने के लिए समाज के सभी नियमों का रिवाजों का पालन करती है । रखैल का उपनाम भी एक स्त्री के लिए ही क्यों निश्चित किया जाता है? नरेन्द्र का पिता तिलोत्तमा की मांग में सिदूंर भरता है, गले में मंगलसूत्र पहनाता हैं , शादी दोनों करते है लेकिन एक स्त्री के लिए यह शादी उसकी पहचान निश्चित करती है और उसे रखैल की पहचान मीलती है । शादी शुदा होते हुए भी एक पुरुष के लिए शादी अपराध नहीं बनती लेकिन एक स्त्री के लिए अभिशाप बन जाती है । पवित्रता का, सतीत्व का मिथक क्यों स्त्री

के लिए ही निश्चित किए जाते है ? पुरुष हंमेशा य़ही चाहता है कि स्त्री उसे ही श्रेष्ठ माने, सर्वोत्तम माने , उसे परमेश्वर माने । इन्हीं भावो को व्य़क्त करते हैं य़े शब्द ,

“ मगर पुरुष का समर्पण देवत्व के प्रति । वह भगवान के प्रति जहां समर्पण करता हैं, वही भगवान होना भी चाहता हैं और उसकी य़ह अपेक्षा स्त्री से कि स्त्री उसे अपने से महत् माने ....अपनी आहुति दे ।”.....(6)

एक तरफ स्त्री परंपरा से चली आ रही गुलामी से मुक्ति चाहती हैं तो प्रिय़ा की माँ कस्तूरी जैसी औरते रुढिय़ों और परंपराओ को ढोनेवाली बेटी के जन्म को कलंक मानती हुई बच्चों में भेदभाव रखती हैं ।

“ य़ह आधुनिक नारी की त्रासदी और उसके संकल्प का एक प्रामाणिक दस्तावेज हैं । ” .....(7)

इसतरह ‘ छिन्नमस्ता ’ की स्त्री अपनी जमीन को तलाशती संघर्ष करती हैं पूरे विद्रोह के साथ अपनी अस्तित्व की स्थापना करती हैं ।

संदर्भ:

१. स्त्री अस्मिता के प्रश्न, सुभाष सेतिया- पृ,- 89

२. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान- पृ,- 13

३. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान- पृ,- 11

४. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान- पृ,- 13

५. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान- पृ,- 12

६. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान- पृ,- 189

७. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल- पृ,- 426